Date 31/03/19

84op

① अस्पृश्यता 27/2/20

(Untouchability)

अस्पृश्यता भारतीय ग्रामीण समाज में एक गंभीर समस्या रही है तथा यह जाति प्रथा का ही भयंकर अभिशाप है। अस्पृश्यता के नाम पर अथवा छूने योग्य न होने के कारण भारतीय समाज में अनेक जातियों को वर्षों तक अनेक मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया तथा उन्हें अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक निर्योग्यताओं के कारण अत्यंत निम्न जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य किया गया। इसीलिए अस्पृश्यता को भारतीय ग्रामीण समाज के लिए बहुत बड़ा कलंक माना जाता है। गाँधी जी के शब्दों में "अस्पृश्यता जिस रूप में आज हिन्दू धर्म में प्रचलित है। यह भगवान तथा मनुष्य दोनों के लिए ही विरुद्ध है। अतः अस्पृश्यता एक विष की तरह है जो हिन्दू धर्म को खाए जा रही है। मेरे विचार से हिन्दू शास्त्रों में सामूहिक दृष्टि से इसकी कहीं भी स्वीकृति नहीं है।"

"हिन्दुओं का अछूतपन एक अनहोनी घटना है। संसार किसी - दूसरे हिस्से में मानवता ने इसका अनुभव नहीं किया। किसी दूसरे समाज में इस जैसी कोई चीज ही नहीं - न तो प्रारंभिक समाज में और न वर्तमान समाज में।"

Page No.

Date ___/___/___

डॉ० अम्बेडकर :— अर्थ एवं परिभाषा

अस्पृश्यता शब्द से सामाजिक असमानता का बोध होता है यह जाति प्रथा के आधार पर निर्मित वह व्यवस्था है जिसमें उच्च जातियों के व्यक्ति अपने से निम्न जातियों के व्यक्ति से छूने से अपवित्र से बचने के लिए समाज में अस्पृश्यता व्यक्तियों से अलग रहने की व्यवस्था की गई थी और उनके लिए अनेक प्रकार की निर्योग्यताएँ के आधार पर अस्पृश्य निर्धारित की गई थी। इन निर्योग्यता निरयोग्यता के आधार पर अस्पृश्य व्यक्तियों से जीवन की समस्त सुख-सुविधाएँ छीन ली जाती है और वे जीवन भर असमान और अपमान का जीवन व्यतीत करते थे। वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल में ही उन्हें चण्डाल, डोम, अन्त्यज आदि नामों से पुकारा जाता है जबकि अंग्रेजी शासन काल में दलित वर्ग कहा जाने लगा। सन् 1932 में डॉ० जयकर के प्रयासों से गाँधीजी एवं डॉ० अम्बेडकर के मध्य पुनः पैक्ट के नाम से एक समझौता हुआ जिसके अनुसार दलित वर्ग को हिन्दुओं का हिन अंग स्वीकार किया गया। इसी समय उन्हें कुछ विशेष अधिकार प्रदान किए गये। और गाँधी जी ने उन्हे दलित वर्ग के स्थान पर हरिजन कहना शुरू किया। सन् 1935 के विधान में इन जातियों को विशेष सुविधा देने के लिए एक अनुसूची तैयार की गई तथा जिन जातियों को इस अनुसूची के अंतर्गत रखा गया उन्हे वैधानिक अनुसूचित जातियों कहा जाने लगा। प्रमुख विद्वानों ने अस्पृश्यता एवं स्पृश्य जाति को परिभाषित किया है।

डी० एन० मजूमदार :— "अस्पृश्यता जातियाँ वे है जो अनेक सामाजिक और राजनीतिक निर्योग्यताओं का शिकार है उच्च जातियों द्वारा परंपरागत तौर पर निर्धारित और सामाजिक दृष्टि से लागू की गई है।"

जी० एस० घुर्ये के अनुसार :— "अनुसूचित जातियाँ वे समूह है जिनको की नाम एक विशेष समय पर लागू अनुसूचित जाति के अन्तर्गत आता है।"

के० एन शर्मा के अनुसार :— "अस्पृश्यता जातियाँ वे है जिनके स्पर्श

Page No. ___

Date ___/___/___

से एक व्यक्ति अपवित्र हो जाए और उसे पवित्र होने के कारण कुछ कृत्य (काम) करने पड़े।"

असस्पृश्यता के उत्पत्ति के कारक
(Factors Responsible for Untouchability)

1. **प्रजातीय कारक :—** घुरिये तथा मजूमदार ने प्रजातीय विभिन्नता को अस्पृश्यता की उत्पत्ति का एक मूल कारण माना है। प्रत्येक प्रजाति साधारणतः अपने आपको अन्य प्रजातियों से श्रेष्ठ मानती है। जब एक प्रजाति किसी अन्य प्रजाति पर विजय प्राप्त कर लेती है, तब विशेषतः अपने को उच्च तथा अन्य प्रजाति को निम्न समझने लगती है। इण्डो-आर्यन लोग भारत में विजेता के रूप में आए और यहाँ के विजित मूलनिवासियों को अपने से हीन समझा तथा उन्हें दास या दस्यु कहा। ऐसे लोगों को अपने सम्पर्क और धार्मिक पूजा संस्कार आदि से इण्डो-आर्यन लोगों ने पृथक् रखा और निम्न जाति के रूप में सामाजिक स्थिति प्रदान की। डॉ० मजूमदार के अनुसार :— तथाकथित दलित जातियों की निर्योग्यताएँ संस्कार सम्बन्धी नहीं है बल्कि इसका आधार मूलतः प्रजातीय और सांस्कृतिक भिन्नताएँ है। इन भिन्नताओं के कारण पृथकता की धारणा धीरे-धीरे इतनी बलवती होती गयी है कि इन लोगों को अछूत और इनके पेशों को घृणित समझा जाने लगा अतएव प्रजातीय भिन्नता अस्पृश्यता की उत्पत्ति का एक प्रमुख कारक है।

2. **धार्मिक कारक :—** धर्म में निषेध पाया जाता है। धर्म व्यक्तियों को कुछ कार्यों को करने की आज्ञा देता है और कुछ को करने पर निषेध लगाता है। जिन कार्यों या पेशों को घृणित समझा गया, उनको करने वाले लोगों को अस्पृश्य या अछूत माना जाने लगा। म्यांमार में कब्र खोदने का कार्य करने वाली उत्पति जाति से लोग घृणा करते है और उसके सम्पर्क से दूर रहने का प्रयत्न करते है। हट्टन के अनुसार "निषेध अस्पृश्यता की उत्पत्ति का एक प्रमुख कारण है।" धर्म में पवित्रता और शुद्धि का भी विशेष महत्व पाया जाता है। करीब-करीब सभी समाजों में ऐसा माना जाता है कि धर्म से

Page No.

Date 30/03/17

~~अस्पृश्यता के उद्य~~

~~अस्पृ~~ अस्पृश्यता जातियों की निर्योग्यताऐं

1. **धार्मिक निर्योग्यताऐं :—** अस्पृश्यों पर अनेक निर्योग्यताऐं लाद दी गई है। इन लोगों को मंदिर प्रवेश, पवित्र, नदी घाटी के प्रयोग, पवित्र स्थलों पर जाने तथा अपने ही घर पर देवी-देवताओं का पूजा करने का अधिकार नहीं दिया गया। इन्हे वेदों तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन एवं सर्वण की आज्ञा नही दी गई। इन्हे अपने सम्बन्धियों के शव, सार्वजनिक समशान घाट पर जलाने की भी स्वीकृति नही दी गई। हिन्दूओं को आदेश दिए गए कि वे अपने धार्मिक जीवन से अस्पृश्यों से पृथक रखें। अस्पृश्य लोगों को पुजा, आराधना, भागवत भजन, किर्तन आदि का कोई अधिकार नही दिया गया। ब्राह्मणों को उनके यहाँ पुजा, श्राद्ध ~~श्राद्ध~~, की और यज्ञ आदि की आज्ञा नही दी गई अस्पृश्यों को जन्म से ही अपवित्र माना गया है और इसी कारण इनके लिए विभिन्न संस्कारों की व्यवस्था नहीं की गई। हिन्दूओं के शुद्धिकरण हेतु धर्म ग्रन्थों में 16 प्रमुख संस्कारों का उल्लेख मिला है। इनमें से अधिकांश विद्या आरंभ ~~अ~~ उपनयन संस्कार और चूड़ा कर्म जैसे प्रमुख संस्कारों की इन्हे आज्ञा भी नही दी गई है।

2. **सामाजिक निर्योग्यताऐं :—** अस्पृश्यों की अनेक सामाजिक निर्योग्यताऐं रही है इन्हें हिन्दूओं के साथ सामाजिक सम्पर्क रखने और उनके सम्मेलनों, गोष्ठियों पंचायतों, उत्सवों एवं समारोहो में भाग लेने की आज्ञा नही दी गई है। इन्हे उच्च जाति के हिन्दूओं के साथ खान-पान का सम्बन्ध रखने से वंचित रखा गया है। उच्च जातियों द्वारा काम में ली जाने वाली वस्तुओं का प्रयोग उन्हे नही दिया गया। अच्छे वस्त्र एवं सोने के आभूषण नही पहनने दिया गया। है दुकानदार इन्हें खाना नही देते, धोबी इनके कपड़े नही धोते, नाई भी इनके बाल नही बनाते, इन्हें अन्य हिन्दूओं

सम्बन्धित सभी वस्तुओं का पवित्र होना पूजा, अनुष्ठान
या यज्ञ की सफलता के लिए आवश्यक है। यही कारण
है कि पूजा की सामग्री को अपवित्र वस्तुओं के सम्पर्क
से दूर रखा जाता है। शुद्धता की इसी धारणा के कारण
घृणित पेशों को करने वाले लोगों के सम्पर्क से बचा
गया और उन्हें अस्पृश्य समझा गया। भारतीय समाज में
मल - मूत्र एवं मृत जानवरों को उठाने वाले लोगों
को इसी कारण अछूत या अस्पृश्य माना गया।

2. सामाजिक कारक :— समाज में प्रथाओं, रीति-
रिवाजों, रूढ़ियों तथा संस्थाओं का
सामाजिक नियन्त्रण एवं उसके साधन के रूप में काफी
महत्व पाया जाता है। व्यक्ति के व्यवहार पर सामाजिक
प्रथाओं एवं रूढ़ियों का बहुत प्रभाव होता है। जब व्यवहार
का कोई प्रकार सामाजिक रूढ़ि के रूप में प्रचलित हो जाता
है तो वह काफी समय तक चलता ही रहता है। यही बात
अस्पृश्यता के सम्बन्ध में रही है। समाज में कुछ पेशों
को अपवित्र एवं घृणित माना जाने लगा और धीरे-धीरे
अस्पृश्यता की प्रथा सामाजिक रूढ़ि बन गई। परिणाम यह
हुआ कि उच्च जातियों के लोग अस्पृश्यों के सम्पर्क से
बचने का प्रयत्न करने लगे। जिससे स्थिति यहाँ तक
पहुँच गई कि स्वयं अस्पृश्य माने जाने वाले लोग भी उनके
सम्पर्क में आने अथवा उन्हें छूने तक से घबराने लगे।
धीरे - धीरे अस्पृश्यता का समाज में इतना अधिक प्रभाव हो
पाया कि अस्पृश्य को देखने या इनकी छाया तक पड़ने
मात्र से उच्च जातियों के अपवित्र होने की बात कही गई।
इससे स्पष्ट है कि अनेक कारकों ने अस्पृश्यता की उत्पत्ति
में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

Scanned with CamScanner